रविवारीय

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

भारत की अपनी रणनीतिक जरूरतें हैं और इस कारण भारत सैन्य गठबंधनों से दूर रहा है. अब नाटो प्रमुख भारत पर दबाव बनाने की कोशिशें कर रहे हैं, लेकिन अमेरिका और नाटो यह भलीभांति जानते हैं कि यदि उन्हें चीन की चुनौती का मुकाबला करना है, तो भारत से बेहतर उनका कोई और सहयोगी देश नहीं हो सकता. जाहिर है कि भारत को नाटो की जरूरत नहीं है, लेकिन अमेरिका और नाटो को भारत की हमेशा जरूरत पड़ती रहेगी. यही कारण है कि भारत ने नाटो, यूरोप और अमेरिका को कड़ा संदेश देते हुए कहा है कि भारत जनता की ऊर्जा जरूरतों के आगे किसी तरह के अंतरराष्ट्रीय दबाव या दोहरे मानदंड को स्वीकार नहीं करेगा, और वह वैश्विक हालात और बाजारों के मुताबिक ही अपने फैसले लेता रहेगा.

चीन के ख़िलाफ़ भारत को मोहरा बनाने की कोशिशें विफल

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बलपूर्वक कूटनीति एक अहम दांव-पेंच है, जो बिना सीधे सैन्य टकराव के राजनीतिक मकसद हासिल करने की संभावना रखती है. हाल ही में नाटो महासचिव मार्क रट ने रूस के बहाने भारत और ब्राजील को धमकाने की जो कोशिशें कीं, वे असल में चीन के खिलाफ नाटो और अमेरिका की नाकामियों को ही उजागर करती हैं. नाटो के लिए इस दौर में चीन सबसे बड़ी चुनौती है, वहीं दक्षिण अमेरिकी देश ब्राजील और चीन का बढ़ता व्यापार यूरोप और अमेरिका के लिए नई सिरदर्दी बन गया है. चीन न सिर्फ किसी भी अन्य देश से ज्यादा ब्राजील से निर्यात खरीदता है, बल्कि वह तेल से लेकर खनिज और कृषि तक के अहम क्षेत्रों में उत्पादन पर भी अपना नियंत्रण रखता है.

भारत बेशक अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति के केंद्र में है, लेकिन कई अमेरिकी कोशिशों के बावजूद भारत ने चीन के साथ अपने संबंधों में संतुलन बनाए रखा है. यही नहीं, भारत ने चीन के खिलाफ किसी भी सैन्य गठबंधन में शामिल होने से साफ इनकार कर दिया है.

यूरोप और पश्चिम एशिया में चीन की मज़बूत पकड़

दिलचस्प बात यह है कि यूरोप, अफ्रीका और पश्चिम एशिया के कई रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण देशों में चीन की स्थिति को कमजोर करने में अमेरिका और नाटो पूरी तरह

विफल रहे हैं. इसके बावजूद वे चीन के खिलाफ खड़े होने के लिए भारत जैसे शांत देश पर दबाव डाल रहे हैं. हिंद-प्रशांत में भारत की मदद के बिना नाटो और अमेरिका चीन को चुनौती देने की स्थिति में नहीं हैं, और यही मजबूरी अब दबाव के रूप में सामने आ रही है. हिंद-प्रशांत एक विशाल भौगोलिक समुद्री क्षेत्र है जो अफ्रीका के तटों से लेकर अमेरिका तक फैला हुआ है. इसमें अरब सागर, खाड़ी क्षेत्र, हिंद महासागर, दक्षिण चीन सागर और प्रशांत महासागर शामिल हैं. यह दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले और आर्थिक रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है, जिसमें एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका महाद्वीप आते हैं.

हिंद-प्रशांत पर चीन की पैनी नज़र

हिंद-प्रशांत समुद्री व्यापार और रसद मार्गों का केंद्र है. भारत और चीन जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं, जो दुनिया के सबसे बड़े बाजारों का प्रतिनिधित्व करती हैं. यह एक बहु-ध्रुवीय क्षेत्र है जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद और जनसंख्या के आधे से अधिक हिस्से के लिए जिम्मेदार है. यहां खनिज, तेल और गैस के भंडार के साथ-साथ मछली भी बहुतायत में पाई जाती है. हिंद महासागर में भारत की रणनीतिक स्थिति बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मध्य पूर्व, मध्य एशिया, चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच स्थित है.

हिंद-प्रशांत द्वीप समूह पर चीन की लंबे समय से निगाहें हैं. करीब डेढ़ दशक से चीन इस इलाके में अपने व्यापार, आर्थिक मदद, कूटनीतिक और व्यावसायिक गतिविधियों को लगातार बढ़ा रहा है. हिंद-प्रशांत द्वीप समूहों के संसाधनों पर चीन की नजर है, क्योंकि ये संसाधन चीन के विकास के लिए अहम हैं. इसलिए इन संसाधनों तक बेहतर पहुंच बनाना भी चीन की प्राथमिकता है. वहीं, सामरिक दृष्टि से भी यह माना जाता है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में मजबूत स्थिति, युद्धकाल में महत्वपूर्ण बढ़त दे सकती है तथा मोलभाव की कूटनीति को भी पुख्ता करती है.

अमेरिका की विफल विस्तारवादी नीति

एशिया में प्रभाव कायम करने और चीन को दबाने के लिए अमेरिका का सख्त रुख बार-बार सामने आता है, लेकिन वह कामयाब नहीं हो पा रहा है. भारत, इंडोनेशिया, ताइवान, मलेशिया, म्यांमार, ताजिकिस्तान, किर्गिस्तान, कजाकिस्तान, लाओस और वियतनाम जैसे देश चीन की विस्तारवादी नीतियों से चिंतित रहे हैं, लेकिन इन देशों को अमेरिका पर भी भरोसा नहीं है. अमेरिका ने क्वाड जैसा समूह बनाकर भारत को उसका सदस्य बनाया, जबकि हकीकत में क्वाड के सदस्य देशों जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत के चीन से आर्थिक संबंध मजबूत रहे हैं.

वर्ष 2021 में नाटो की रणनीतिक रिपोर्ट में पहली बार चीन को सुरक्षा चुनौती के रूप में नामित किया गया था. इसके बाद साल 2022 के मैड्रिड शिखर सम्मेलन में नाटो ने औपचारिक रूप से कहा था कि चीन की नीतियां नियम आधारित वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देती हैं. नाटो की वर्ष 2022 की रणनीतिक अवधारणा इस गठबंधन को चीनी सैन्य, आर्थिक और औद्योगिक चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए ट्रांस-अटलांटिक प्रयासों के एक अभिन्न अंग के रूप में परिभाषित करती है.

चीन के खिलाफ भारत को मोहरा बनाने की कोशिश

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रशासन की पहली क्षेत्रीय विशिष्ट रिपोर्ट, हिंद-प्रशांत रणनीति पर फरवरी 2022 में जारी की गई थी, जिसमें यह स्पष्ट किया गया था कि भारत अहम भू-राजनीतिक चुनौतियों से घिरा हुआ है. ये चुनौतियां खास तौर पर चीन और वास्तविक नियंत्रण रेखा पर उसके रुख से मिल रही हैं. रिपोर्ट में चीन को लेकर कहा गया था कि वह आर्थिक, कूटनीतिक, सैन्य और तकनीकी ताकत के बल पर हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर प्रभाव डाल रहा है. अमेरिका और नाटो की चीन को चुनौती देने की कोशिशों के बीच भारत से यह अपेक्षा बढ़ गई कि भारत चीन के खिलाफ आक्रामक व्यवहार करे. अमेरिका ने भारत को सैन्य मदद देने की पेशकश कर चीन पर दबाव बढ़ाने की कोशिशें भी कीं, लेकिन भारत ने बेहद संयमित होकर रणनीतिक फैसले लिए और चीन के खिलाफ किसी विदेशी मदद से परहेज किया.

यूरोप और अमेरिका में चीन को लेकर मतभेद

चीन ने साल 2012 में मध्य और पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ सहयोग बढ़ाने के इरादे से एक फोरम शुरू किया था, जिसमें अल्बानिया, बोस्निया एवं हर्जेगोविना, बुल्गारिया, क्रोएशिया, चेक गणराज्य, एस्टोनिया, ग्रीस, हंगरी, लातविया, स्लोवाकिया, मोंटेनेग्रो, सर्बिया, पोलैंड, नॉर्थ मैसिडोनिया, रोमानिया और स्लोवेनिया शामिल हैं. दक्षिणपूर्वी, मध्य और पूर्वी यूरोप में चीन की भूमिका लगातार बढ़ रही है. यह देखा गया है कि यूरोप और नाटो के एक अहम सदस्य फ्रांस की नीतियां अमेरिका और चीन को लेकर समान और संतुलित रही हैं. यूरोपीय संघ एक मजबूत संगठन है जो व्यापार, सुरक्षा, कृषि, मत्स्य पालन, पर्यावरण और जलवायु सहित विभिन्न क्षेत्रों में काम करता है. वैश्विक कूटनीति में इसका अहम स्थान है. यूरोपीय संघ स्थिरता, सुरक्षा, समृद्धि, लोकतंत्र, आधारभूत स्वतंत्रता एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विधि के नियमों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करता है. अमेरिका के साथ इसके गहरे आर्थिक और सामरिक सरोकार हैं और नाटो इसका संवर्धन करता है. हिंद-प्रशांत में चीन सबसे बड़ी चुनौती है, लेकिन नाटो के कई देश मानते हैं कि यूरोप को अमेरिका पर अपनी निर्भरता कम कर देनी चाहिए.

कविताएं

खामोशी

सुधा ठाकुर

खामोशी ही उसकी
आवाज़ थी

कहने को कुछ नहीं
होता था,
फिर भी वो
खामोश जुबां से
सब कुछ कह देता था.

उसकी आँखों में छलकता था
प्यार — लबालब, बेआवाज़,
पर उसके चारों ओर
बस गहरा सन्नाटा थाज
ठहरा हुआज साँस लेता हुआ.

घंटों बैठा रहता —
किसी के इंतज़ार में,
पर किसका ?
ये कभी किसी को नहीं बताया.

बेचैनी से आँखें घूमती थीं,
जैसे कोई जाना-पहचाना चेहरा
भीड़ में खोज रहा हो —
लेकिन वो कौन था,
कभी किसी को पता नहीं चला.

कई बार चाहा हमने
उससे पूछ लें —
पर हर बार
वो मुस्कुरा देता,
थोड़ी बात घुमा देता,
फिर चुप हो जाता.

आखिर —
क्या राज़ था उसके अंदर,
जिसे वो
कहना तो चाहता था,
पर लफ्ज़ों में ढाल नहीं पाता था ?

वो बस सिर झुका देता थाज
एक मासूम सी मुस्कान लिए.

पर जब
वो अपने पाँव की उंगली से
ज़मीन को कुरेदता था,
तो ऐसा लगता —
मानो उस माटी पर
अपना कोई अधूरा प्रेम
लिख रहा हो वो.

और उसकी आँखों से
बरसता सावन
उस लेख को सींच
देता था
एक ऐसा लेख —
जिसे सिर्फ वही
पढ़ सकता था.
केवल वही...

पूरवाई की चिट्ठियां

पूरवाई जब छूकर
गुज़री
तो कुछ कह गई थी

कानों में,
पुरानी यादें लिपटी थीं उसमें
भीग गई थीं अरमानों में...

एक सूखी चिट्ठी खिड़की पे थी
जिस पर तेरा नाम लिखा था,
शब्द धुंधले थे पर इत्र सा
हर जुमला अब भी महका था.

वो पेड़ जो साथ देखा करते
अब अकेले झूम रहे थे,
उनकी शाखें भी
तेरे ज़िक्र में चुपचाप टूट रहे थे...

तू जब भी हँसता था
मौसम हरा हो जाता था,
अब धूप तो वही है लेकिन
मन रेगिस्तान हो जाता है.

मैं अब भी हर शाम को
तुलसी के चौरे पे दीप जलाती हूँ,
पर तेरी आहट के इंतज़ार में
रातों से आँखें चुरा ले जाती हूँ.

पूरवाई आई है आज फिर से
तेरे नाम की पाती लेकर,
शायद इस बार तू लौटे
एक नई सुबह की बाती लेकर...

व्यंग्य

ये ताली बजवाने वाले लोग .....

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

हम लोग आज के लख टकिया कवियों को खूब जानते हैं. उनकी रूमानी कविताओं और गीतों को खूब सुनते और गुनगुनाते हैं, पहचानते और सुनते हैं. आजकल मार्केट में जो सबसे ज्यादा हिट कवि हैं उनमें से एक ब्लॉक बस्टर कवि हैं, कुमार विश्वास. उन्हें सुमधुर गायन के लिए कवियों की लता मंगेशकर कहा जाए तो शायद कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी. उनके कंठ में सरस्वती वास करती है. कुछ लोगों को उन्हें लता जी कहना भले ही नगवार गुजरे. कोई बात नहीं गुजरे तो गुजरे अपुन को क्या . वैसे भी हम लिंग भेद में विश्वास नहीं करते सो कुमार के साथ भी ये भेद नहीं रखेंगे. यह मेरी निजी राय है. कुमार विश्वास कई सालों से मंचों पर एक गीत गाकर ईमानदारी से अपना परिचय देते हैं - कोई दीवाना कहता है कोई पागल समझता है. उनके इतना कहते ही श्रोता पागल हो खूब तालियां पीटने लगते हैं. इनमें महिलाओं की संख्या खूब होती हैं. वे इतनी जोर से तालियां पिटतीं हैं कि उनकी हथेलियों और लिपस्टिक का रंग एक सा हो जाता होगा. उनसे हाथ दिखाने का कह कर सियासी जोखिम कौन मोल ले. लोग ये समझ लेंगे की 1885 के विचारों का फालोवर है. आजकल 1980 का जलजला है. आज का भारत नया भारत है. यह कहना अत्यंत दुष्कर है कि महिला श्रोताओं को इतनी खुश किस बात पर होती हैं ? क्या इस बात पर की कोई कवि पहली बार सच्चाई बयान कर रहा है या इस बात पर खुशी व्यक्त कर रहीं हैं कि महिलाओं को उनमें वाक़ई में कोई दीवाना या पागल नज़र आता है. पुरूष श्रोताओं को भी शायद यह लगता हो कि चलो उन जैसा कोई दूसरा तो मिला. यह स्वाभाविक है कि अपने जैसा कोई मिल जाए तो अपनत्व पैदा हो जाना स्वाभाविक है ही. वैसे भी कवि अक्सर कल्पनाओं में जीते हैं. कुछ ही लोग ही तो हैं जो हकीकत बयां करने की हिम्मत रखते हैं.

वास्तविकता तो यह कि सच्चाई कहने वाले कवि आजकल कम ही हैं, वरना आजकल तो कवि सम्मेलनों में चुटकुले या फिल्मी धुन पर पैरोड़ियाँ और किस्से कहानियां ही अधिक होती हैं . इसके अलावा पहले कवि सम्मेलन सुनने की वस्तु होती थी परंतु अब सुनने की कम और देखने की अधिक हो गई है. पहले कवि सम्मेलन में जगह नहीं मिलने पर श्रोता आधा - आधा किमी दूर तक लगे रहने वाले लाउडस्पीकर के भोंगों के पास खड़े होकर या फट्टी पर बैठकर कविताएं सुन लेते थे. कवि की सूरत दिखे या नहीं उससे कोई अंतर नहीं पड़ता था . श्रोताओं के लिए कवि की आवाज ही काफी हुआ करती थी. पर अब ऐसा नहीं है. अब कवि सम्मेलन सुनने की नहीं देखने की चीज हो गई है. अब कवियत्रियों को देखना जरूरी हो गया है. इससे उनका भी उत्साह बढ़ता है और श्रोता का भी. वह यह सब देखकर खुशी खुशी रतजगा कर लेता है.

पहले कवि सम्मेलन के मंच पर आज की तरह कवि और कवियत्रियों के नाज़ो अंदाज, फूहड़ हंस मजाक और छेड़छाड़ नहीं होतीं थीं. पहले लटके झटके के शौकीनों को यह सब देखने के लिए कव्वालियों में जाना पड़ता था. लेकिन अब ऐसा नहीं है, यह नजारा अब कवि सम्मेलनों के मंच पर ही कवियत्रियों में देखने को मिल जाता है. मतलब की अब कविसम्मेलन टू-इन-वन हो गए हैं. कवि सम्मेलन में आज कविता के साथ कव्वालियों का नाज-नखरा लटके-झटके और अदाएं एक दम फ्री देखने -सुनने को मिल जाते हैं.

बता दें कि ऐसा सभी कवियत्रियों के साथ नहीं है लेकिन यहां भी तरबूज को देखकर खरबूजे के रंग बदलने की कहावत तो यहां भी 16 आने सटीक बैठती है. इसका एक फायदा यह हुआ कि अब कवि सम्मेलनों में कवि भैया भी अपना मेकओवर करके छैला बाबू की स्टाइल में आने लगे हैं. इस मौके यहाँ सुभद्राकुमारी चौहान की कविता की यह लाइन याद आने लगतीं है - जैसे बूढ़े भारत में फिर से आई जवानी (थी) हो ... आजकल कवि सम्मेलन के मंच पर जीजा-साली जैसा माहौल नजर आने लगता है. वहां कुछ कवि तो लव गुरु मटुकनाथ जैसी हरकतें करते नजर आने लगते हैं.

पहले कवि सम्मेलन का शुभारंभ सौम्य और धवल वस्त्रधारिणी किसी कवित्री द्वारा मां सरस्वती की वंदना से हुआ करता था. आज कल शुरूआत कवि और कवित्रियों के बीच नोकझोंक और श्रोताओं के नवनीत लेपन से होती हुई आयोजकों द्वारा पारिश्रमिक के रूप में बांटे जानेवाले लिफाफों की चर्चा तक आ जाती है. पहले मंचासीन होने के पहले कवि मंच को स्पर्श कर नमन करते थे. जबकि आज कल आमंत्रित कवि, मंच पर चढ़ते ही ग्रुप लीडर के चरण स्पर्श कर कविता पाठ के समय ग्रुप लीडर का स्वाति वाचन करने की जरूरी रस्म अदा करता है ताकि ग्रुप लीडर की कृपा आगे भी उन पर बनी रहे. आजकल कवि सम्मेलनों के मंच पर कवियों द्वारा अपनी कविता पर ताली बजवाने का चलन सा हो गया है. वे कविता पाठ के बीच-बीच में श्रोताओं को ताली बजाने का धमकीनुमा कमांड भी देते जाते हैं. वे इस श्रापनुमा कमांड में यह यह चेतावनी भी दे देते हैं कि यदि उन्होंने तालियां नहीं बजाईं तो श्रोताओं को यह काम अगले जन्म में करना होगा. पहले कवि सम्मेलनों में ऐसा नहीं होता था. गीत,छंदों और कविताओं में इतना दम हुआ करता कि श्रोता खुद ब खुद तालियां बजाकर वन्स मोर, वन्स मोर की फरमाइश करके सम्मेलन स्थल को गुंजा देता था.

पहले श्रृंगार रस की कविता हो, या वीर रस की या हास्य रस की कविताएं हों, शब्द संयोजन ऐसा होता था कि दर्शक वाह-वाह कर उठते थे. काका हाथरसी हास्यरस के मंचीय सिद्धहस्त कवि थे.

कव्वालियों के आयोजन में कव्वाल मुंह में पान, हाथों में गजरा और सिर पर गोटेदार हरे रंग की टोपी पहने अपने अपोजिट, मेकअप से लिपि पुती, लिपिस्टिक लपेटी और गालों पर बालों की लटें लटकाए बैठी कव्वालन से जो शाब्दिक छेड़छाड़ करता था वह सुनने से अधिक देखने लायक होती थी. इस छेड़छाड़ का दर्शक पैसा वसूल अंदाज में ठहाके लगा कर पूरा मज़ा लेता था. उसका कव्वाली पर ध्यान कम जाता था. पूरा ध्यान तो कव्वालन बाई की नाज़ो अंदाज और ग़लों पर लटकतीं लटों रहता था. न तबलों की थाप पर ध्यान जाता था और न ही साज़ और साजिंदों पर और न ही उनकी आवाज़ पर. उनकी आवाज़ तो वैसे भी अधिक गायन के कारण फटे बांस सी लगती थी. कव्वालियों में शौकीन श्रोताओं द्वारा कव्वाल और कव्वालनों को खुश हो कर इनाम में नोट दिए जाते थे.

शिव तत्व विचार

आचार्य टेकनारायण उपाध्याय
वरिष्ठ अर्चक, श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी

शिवत्व अर्थात लोक मंगल की वह विराट भावना जिसमें स्वयं अनेक कष्टों को सहकर भी दूसरों के कष्टों को मिटाने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है. स्वयं खुले आसमान के नीचे जीवन यापन कर रावण को सोने की लंका देने वाले भगवान शिव से श्रेष्ठ इसका कोई उदाहरण नहीं हो सकता है. भगवान शिव भले ही स्वयं फकीरी में रहे पर बाणासुर और रावण जैसे अनेक भक्तों को उन्होंने अनंत ऐश्वर्य सुख भी प्रदान किये.

भावन भगवान महादेव की आराधना का पावन मास ही श्रावन मास है. भगवान शिव जैसा कृपालु-दयालु कोई दूसरा देव नहीं है. जल, दूध, वेलपत्र, भांग, धतूरा चढ़ाने एवं प्रणाम करने मात्र से ही ये प्रसन्न होकर मनोवांछित फल प्रदान कर देते हैं. भगवान महादेव स्वयं अभाव में रहते हुए भी भक्तों के अभावों को हरने वाले हैं.

आशुतोष भगवान महादेव की अल्प आराधना भी रंक को राजा बना देती है. इस पावन श्रावण मास में भगवान महादेव का अर्चन करके अपने जीवन को सफल एवं सार्थक बनाने का सौभाग्य हम सबको अवश्य प्राप्त करना चाहिए.

अपने भक्तों की प्रत्येक उस इच्छा की पूर्ति भगवान महादेव ने की जो भक्तों द्वारा उनसे याचना की गई. जिसके अंदर लोकमंगल का भाव न हो, जिसकी प्रवृत्ति में परोपकार न हो और जिसका मन किसी की पीड़ा को देखकर व्यथित न होता हो वह व्यक्ति शिव-शिव कहने मात्र से कभी भी शिव भक्त नहीं हो सकता. जो प्रत्येक स्थिति में भक्तों का कल्याण करे वह शिव और जो कल्याण की भावना रखे वही शिव भक्त है.

पवित्र श्रावण मास में शिवार्चन करते-करते एक सूत्र और सीखने योग्य है. भगवान महादेव की गृहस्थी के दर्शन करते हुए विचार करें कि कितने विरोधाभासी लोग भी बड़ी शांति से इस परिवार में रहते हैं.सबकी प्रकृति अलग-अलग है फिर भी सब शांति से रहते हैं. माँ पार्वती का वाहन शेर है और शिवजी का नंदी है. वृषभ शेर का भोजन है, लेकिन यहाँ कोई वैर नहीं है.

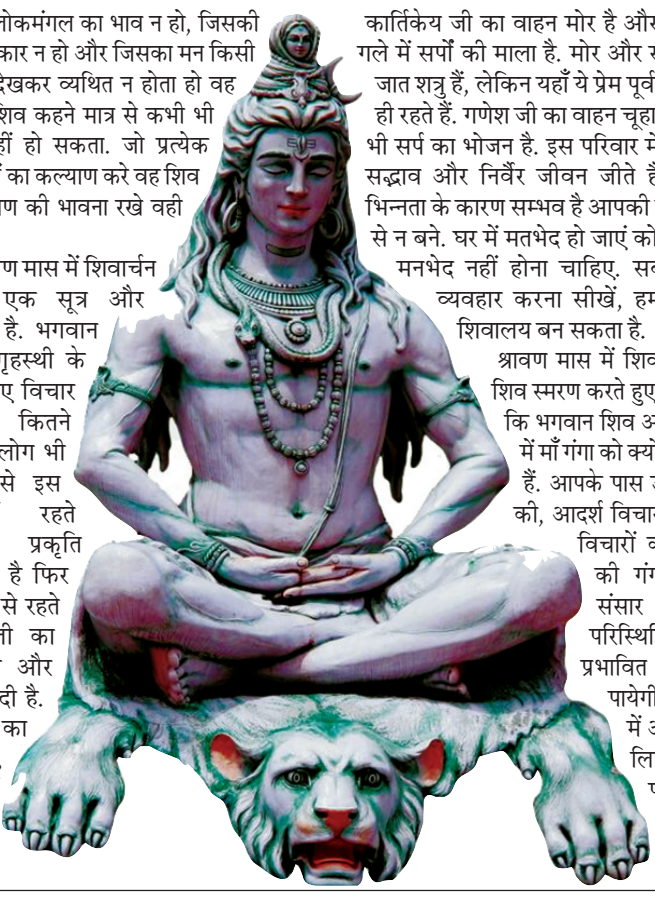

कार्तिकेय जी का वाहन मोर है और शिवजी के गले में सर्पों की माला है. मोर और सर्प भी जन्म जात शत्रु हैं, लेकिन यहाँ ये प्रेम पूर्वक एक साथ ही रहते हैं. गणेश जी का वाहन चूहा है और चूहा भी सर्प का भोजन है. इस परिवार में सब शांति, सद्भाव और निर्वैर जीवन जीते हैं. वैचारिक भिन्नता के कारण सम्भव है आपकी घर में किसी से न बने. घर में मतभेद हो जाएं कोई बात नहीं, मनभेद नहीं होना चाहिए. सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करना सीखें, हमारा घर भी शिवालय बन सकता है.

श्रावण मास में शिव पूजन और शिव स्मरण करते हुए यह भी जानें कि भगवान शिव अपनी जटाओं में माँ गंगा को क्यों धारण करते हैं. आपके पास उच्च विचारों की, आदर्श विचारों की पवित्र विचारों की एवं ज्ञान की गंगा होगी तो संसार की विषम परिस्थितियाँ आपको प्रभावित नहीं कर पायेगी. इस दुनिया में आगे बढ़ने के लिए और शांति पाने के लिए आवश्यक है, कि अपने आप को सकारात्मक, ज्ञानमय व आदर्शमय विचारों से सम्पन्न रखा जाए.

छोटी-छोटी बातों से खिन्न हो जाना, उदास हो जाना, निराश हो जाना, यह दु:ख को आमंत्रण देने जैसा है. दु:ख का बहुत ज्यादा स्मरण रखने से कई बार मन में दु:ख इस तरह प्रवेश कर जाता है, कि फिर जीवन भी दु:खमय ही लगने लगता है. शिवजी की तरह ज्ञान की गंगा में, भगवद् चिन्तन की गंगा में, भगवद् भजन की गंगा में नहाओ, ताकि आपका संपूर्ण जीवन आनंदमय बन सके.

भगवान शिव गले में सर्पों की माला पहनते हैं पर कभी भी अपनी शांति का त्याग नहीं करते हैं. सर्पों की माला धारण करना अर्थात् अनेक कठिनाइयों को अपने ऊपर ले लेना. जीवन है तो मुश्किलें तो आयेंगी, बस जो उन्हें हँसके सह लेता है, वह शिव बन जाता है और जो उन्हें नहीं सह पाता वह शव बन जाता है. मुश्किलों का समाधान उनसे मुकर जाना नहीं है अपितु मुस्कुराकर सामना करने में है. विषम घड़ी में आप अपने चेहरे पर मुस्कान लाने की हिम्मत जुटा पाते हैं तो फिर आपकी आंतरिक शांति भंग करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है. भगवान शिव के गले में सर्पों की माला हमें यह सन्देश देती है, कि मुश्किलें तो किसी को भी नहीं छोड़ती बस आप अपनी हिम्मत और मुस्कान कभी मत छोड़ना. गले में विषमता के विषधर होने के बावजूद भी आनंद और प्रसन्नता में जीना भगवान महादेव के जीवन से सीखना चाहिए.